महाशिवरात्रि... स्वर्णिम दुनिया में बदलने का त्योहार

शिवालयों से सुनाई देती घण्टों की गूंज, शिव पर जल चढ़ाने हेतु आतुर भक्तगण, माताओं के झुण्ड के झुण्ड जिस ओर प्रस्थान करते हैं और अनन्य भक्त जिस दिन शिव दर्शन की कामना रखते हैं, वो महाशिवरात्रि का पर्व पुनः हमारे समक्ष है। यूं तो भारत में पर्व ही पर्व हैं परंतु इस पर्व को महाशिवरात्रि कहा जाता है। भक्त विभिन्न अर्थों में इसे शिव की महारात्रि समझ लेते हैं। परंतु शिव तो रात-दिन से परे हैं और न ही उन्हें कैलाश पर तपस्या करने की आवश्यकता है। वे तो सम्पूर्ण हैं, सदा कर्मातीत हैं, सभी सिद्धियों के स्वामी हैं, उन्हें तपस्या नहीं करनी है। ये महान कार्य तो महादेव का है जबकि शिव तो देवों के भी देव हैं।

कौन हैं शिव और क्यों मनाई जा रही है शिवरात्रि?

ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता हैं शिव, इसलिए उन्हें त्रिमूर्ति कहा जाता है। ॐ के प्रतीक चिन्ह में ऊपर दिखाई जाने वाली बिन्दी उन्हीं की यादगार है, यह रहस्य विदूषकों को भी ज्ञात नहीं। वे ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को ही सर्वोपरि मान लेते हैं, परंतु विवेक भी कहता है कि तीनों के ऊपर भी कोई महासत्ता होनी ही चाहिए और वह परमसत्ता है सर्वशक्तिवान शिव, जो निराकार है अर्थात् अशरीरी है, महाज्योति है, स्वयं प्रकाशमान है, सूक्ष्मातिसूक्ष्म है, इसलिए उन्हें बिन्दु स्वरूप में ही दर्शाया जाता है, परंतु उस अति सूक्ष्म बिन्दु से अनंत एनर्जी निरंतर चहुं ओर फैलती है।

वे अजन्मा हैं, स्वयंभू(शम्भू) हैं, उनका नाम शंकर नहीं, कल्याणकारी होने के कारण शिव है। वे ब्रह्मलोक अर्थात् परमधाम के वासी हैं, वे इस धरा पर अवतरित होते हैं। जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, जब चारों ओर पाप बढ़ जाता है तब वे आते हैं। जब सभी मनुष्यात्माएं पतित बन जाती हैं, तब वे आते हैं उन्हें पावन बनाने। जब चहुं ओर अज्ञान का अंधकार छा जाता है, तब वे आते हैं ज्ञान का प्रकाश देकर सबके मन के अंधकार को हरने। जब पाँच विकारों की माया सभी को अपने पंजे में जकड़ लेती है और विकारों के नशे में मनुष्य गहरी नींद सो जाता है, तब वे आते हैं उन्हें जगाने। जब संसार दुःख व अशांति से त्राहि-त्राहि करने लगता है तब वे आते हैं सबके दुःख हरने। उनके आने का निश्चित समय है। हाँ, केवल एक बार। वे भला युग-युग में क्यों आयेंगे! हर युग में तो धर्म की ग्लानि होती ही नहीं। शास्त्र अनुसार भी सतयुग में धर्म के चार चरण, त्रेता में तीन, द्वापर में दो तथा कलियुग में एक चरण धर्म का होता है। कलियुग के अंत में जब वह एक चरण भी दस प्रतिशत रह जाता है, तब वे आते हैं सत्य देवी-देवता धर्म की पुनर्स्थापना करने। और वो समय अब है। ये कलियुग का प्रथम चरण नहीं, अंतिम चरण है।

कलियुग के इस घोर अंधकार में ज्ञानसूर्य प्रकट होकर इस महारात्रि को, सतयुगी दिन में बदलने का अपना दिव्य कार्य कर रहे हैं। उनका वाहन नंदी है। यह गुह्य रहस्य है। भला बैल पर निराकार कैसे विराजमान होंगे! वे प्रजापिता ब्रह्मा के मनुष्य तन में प्रवेश होकर अपने कार्य करते हैं। छोटे-बड़े दो नंदी भी दिखाये जाते हैं। इनका भी अद्भुत रहस्य है।

जिन्होंने जन्म-जन्म भगवान की भक्ति की या देवी-देवताओं की भक्ति की, उन्हें भक्ति का फल देने के लिए भगवान को आना पड़ता है। और अब वे भक्ति का फल दे रहे हैं। हज़ारों वर्ष की भक्ति का फल होता है...भगवान से मिलन। और भगवान आकर देते हैं ज्ञान। और ये दोनों प्राप्तियां अब हो रही हैं। आप उन्हें जानो और पहचानो।

भक्ति का फल देने आ गये हैं शिव

जिन्होंने जन्म-जन्म भगवान की भक्ति की या देवी-देवताओं की भक्ति की, उन्हें भक्ति का फल देने के लिए भगवान को आना पड़ता है। और अब वे भक्ति का फल दे रहे हैं। हज़ारों वर्ष की भक्ति का फल होता है...भगवान से मिलन। और भगवान आकर देते हैं ज्ञान। और ये दोनों प्राप्तियां अब हो रही हैं।

हे प्रभु प्रेमी भक्तों, अपने से पूछो, जबकि भगवान भक्ति का फल देने आ गये हैं, तब भी क्या आप भक्ति ही करते रहेंगे? ये तो ऐसे ही है जैसे सूर्य के उदय होने के बाद व उसका प्रकाश चारों ओर फैलने के बाद भी दीपक जलाते रहना। तो आइये, अब भक्ति का फल पाइये। आइये, अब प्रभु मिलन का सुख पाइये। आओ, अपनी जन्म-जन्म की प्यास मिटाने। आओ, भगवान से वरदान पाने। आओ, भगवान से सर्व सम्बंध निभाने।

जगाने आ गये हैं शिव...

भक्तगण मंदिरों में शिवरात्रि पर सारी रात जागरण करते हैं। वे इंतज़ार करते हैं कि शिव आयेंगे, उन्हें दर्शन देंगे। वे नशा भी करते रहते हैं और समझते हैं कि हम महादेव को फॉलो कर रहे हैं। परंतु शायद ही किसी विरले सच्चे भक्त को उनके दर्शन होते हों। वैसे ही तामसिक नशे में चूर व्यक्ति भला भगवान के दर्शनों का अधिकारी है भी कहाँ! ये तो ईश्वरीय नशे की बात है। अब स्वयं ज्ञान के सागर आकर सभी भक्तों को जगा रहे हैं। वे कह रहे हैं कि हे मेरे प्यारे भक्तों, तुम तो मेरे बच्चे हो। तुम अज्ञान की व विकारों की नींद में सो गये हो। अब जागो, तुम तो देवता थे, महान थे, पवित्र थे। अब स्वयं को पहचानो। वे सत्य ज्ञान देकर आत्म-जागृति कर रहे हैं। यही सच्चा जागरण है। तो सभी जग जाओ और देखो तुम्हारा परमपिता शिव तुम्हारे सामने है, उसे पहचानो।

शिवरात्रि पर सदा के लिए व्रत लो

भोजन का व्रत ही पर्याप्त नहीं। शिव भक्तों को वैसा भोजन भी नहीं खाना चाहिए जो शिव को स्वीकार नहीं। एक दिन भोजन का व्रत कर लेना और पूरा वर्ष तामसिक भोजन खाना शिव को पसंद नहीं। इस शिवरात्रि पर सात्विक भोजन खाने का व्रत लें। हो सके तो सभी शिव के भक्त व शिव के वत्स इस महापर्व पर क्रोध को त्यागने का व्रत लें अथवा अपनी किसी बुराई को सदा के लिए त्यागने का संकल्प करें तो शिवरात्रि का पर्व आपके लिए वरदान बन जाएगा।

शिवरात्रि पर शिव-मिलन करें

कलियुग की इस महारात्रि में शिव स्वयं आकर मिलन मना रहे हैं। वे आपका आह्वान कर रहे हैं। जन्म-जन्म तो आपने उनका आह्वान किया। अब आ जाओ और अपने परमपिता से मिलन मनाओ, उनका सच्चा प्यार अनुभव करो और उनकी पालना का सुख लो। फिर ये न कहना कि हमको बताया नहीं।

दिल्ली-करोल बाग(पांडव भवन)। गीता जयंती के अवसर पर महामण्डलेश्वर स्वामी हरि ओम गिरी जी महाराज गीता के विषय पर अपने विचार रखते हुए। साथ में मंसासीन हैं बायें से स्थानीय सेवाकेन्द्र की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु.पुष्पा दीदी, संस्थान के कार्यकरी सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ.मृत्युंजय, मजलिस पार्क सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.राज दीदी तथा ब्र.कु.विजय बहन।

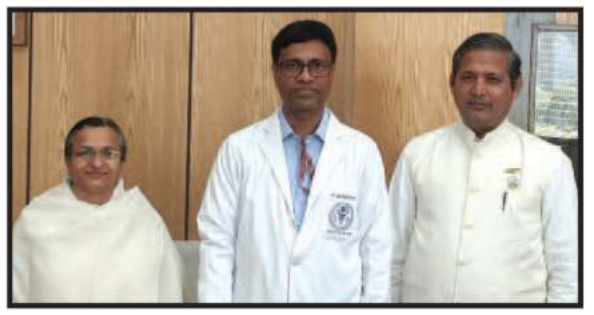

दिल्ली-लोधी रोड। प्रो. एम.श्रीनिवास,निदेशक,एम्स के साथ ज्ञान चर्चा के उपरांत समूह चित्र में ब्र.कु.पीयूष भाई एवं ब्र.कु.गिरिजा बहन।

चरखी दादरी-हरियाणा। रोज गार्डन में आयोजित जिला स्तरीय अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की जिला प्रभारी ब्र.कु. प्रेमलता बहन को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए चेयरमैन बख्शी सैनी, सीडीपीओ गीता सहारण एवं अन्य प्रशासनिक अधिकारी।

गया ए.पी.कॉलोनी-बिहार। स्थानीय सेवाकेन्द्र पर श्रीमद् भागवत गीता जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में प्रधान न्यायाधीश रविंद्र नाथ त्रिपाठी, जिला कारा अधीक्षक विजय कुमार अरोड़ा, समाजसेवी मगध प्रमंडल बिहार प्रदेशिक मारवाड़ी समाज के उपाध्यक्ष राजू अग्रवाल, समाज सेविका बीना देवी, डॉ. संजय वर्मा, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग की मगध क्षेत्र प्रवक्ता आशा सिंह, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु.पूजा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। श्रीमद्भगवत गीता जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं महामण्डलेश्वर स्वामी धर्मदेव जी, सुप्रसिद्ध संगीतकार ओम व्यास, ओ.आर.सी. निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, करोल बाग सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु.पुष्पा दीदी, ब्र.कु.जय प्रकाश भाई एवं ब्र.कु.राज दीदी।

रांची-हरमू रोड(झारखण्ड)। विश्व मृदा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ.अरूण कुमार सिंह,वैज्ञानिक बागवानी अनुसंधान केंद्र प्लांडू, संतोष कुमार,उपनिदेशक कृषि विभाग, डॉ.प्रभाकर महापात्र,वैज्ञानिक विरसा कृषि विश्व विद्यालय, नूतन वर्मा,सहायक प्राध्यापक पौधा प्रजनन अनुवांशिकी विभाग, पुष्पा जी शस्य विज्ञान, मुकेश कुमार सिन्हा,उपनिदेशक कृषि विभाग, रोशन नीलकमल,सहायक निदेशक कृषि विभाग तथा सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु.निर्मला दीदी।

कादमा-हरियाणा। राजयोगी ब्र.कु.अमीरचंद जी के द्वितीय स्मृति दिवस पर निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर सरपंच चांदपती देवी, समाजसेवी कप्तान राम अवतार थालौर, अशोक थालौर, महेश फौजी, सुरेंद्र, सुबे स्वामी पंच, ब्र.कु.वसुधा बहन, झोझूकलां सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.ज्योति बहन, जी.के. सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के डॉ.आशीष व कुलवंत की टीम सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

दिल्ली-विपिन गार्डन। बदरपुर पुलिस स्टेशन में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में इंस्पेक्टर्स व अन्य पुलिसकर्मियों के साथ ब्र.कु.विमला बहन, विपिन गार्डन सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.जानकी बहन, ब्र.कु.किरन बहन तथा अन्य।

हरीतकी के अद्भुत...

-पेज 4 का शेष

मूत्रकृच्छ या पेशाब संबंधी बीमारी में फायदा

मूत्र संबंधी बहुत तरह की समस्याएं होती हैं जैसे देर से पेशाब आना या रूक-रूक कर आना, कम मात्रा में पेशाब होना, पेशाब करते वक्त जलन या दर्द होना आदि। इन सब समस्याओं में हरीतकी बहुत काम आती है। हरीतकी, गोखरू, धान्यक, यवासा तथा पाषाण-भेद को समान मात्रा में लेकर 500 मिली जल में उबालें, 250 मिली रहने पर उतार लें। अब इस काढ़े में मधु मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम 10-30 मिली मात्रा में सेवन करने से मूत्र त्याग में कठिनाई, मूत्र मार्ग की जलन आदि रोगों में लाभ होता है।

कामला या पीलिया में फायदे

आजकल के भागदौड़ भरी जिंदगी में सबसे ज़्यादा खान-पान पर ही असर पड़ता है। पीलिया में हरीतकी उपचार स्वरूप काम करती है। लौह भस्म, हरड़ तथा हल्दी इनको समान मात्रा में मिलाकर 500ग्राम से 1 ग्राम मात्रा में लेकर घी एवं मधु से अथवा केवल 1ग्राम हरड़ को गुड़ और मधु के साथ मिलाकर दिन में दो से तीन बार सेवन करने से कामला में लाभ होता है।

कुष्ठ रोग में फायदे

कुष्ठ रोग की परेशानी को कम करने के लिए 20-50 मिली गोमूत्र को 3-6 ग्राम हरड़ चूर्ण के साथ सुबह शाम सेवन करने से फायदा मिलता है।

हरड़, गुड़, तिल तेल, मिर्च, सौंठ तथा पीपल को समान मात्रा में पीसकर 2-4 ग्राम की मात्रा में लेकर एक महीने तक सुबह-शाम सेवन करने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।

हरीतकी कहाँ पाई और उगाई जाती है

हरड़ का वृक्ष पर्वतीय प्रदेशों और जंगलों में 1300 मी की ऊँचाई तक पाया जाता है।